कमला नेहरू महिला महाविद्यालय ; भुबनेश्वर

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

हिंदी भारती

वंदे उत्कल जननी

फरवरी – मार्च – 2019

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. सोनाली राउत

कु. सस्मिता महंती

कु. श्राबणी महंती

संपादकीय

"हिंदी भारती" के सभी पाठकों को "उत्कल दिवस की हार्दिक शुभकामनायें"

विगत दिनों कमला नेहरू महिला महाविद्यालय की छात्रायें और अध्यापिकायें डॉ. उस्मान खान जी के मार्गदर्शन एवं सहयोग से विश्वभारती, शाँतिनिकेतन अध्ययन यात्रा पर गयीं। इस यात्रा और अध्ययन में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र, वरिष्ठ अध्यापक प्रो. हरिश्चंद्र मिश्र, प्रो. मंजू रानी सिंह, प्रो. रामेश्वर मिश्र, प्रो. चक्रधर त्रिपाठी, डॉ. सुभाषचंद्र राय जी का मार्गदर्शन एवं विभाग के शोधार्थी तथा छात्रों, विशेषकर दीपा एवं प्रतीक्षा का सहयोग अविस्मरणीय है। "हिंदी भारती" का फरवरी और मार्च का अंक समवेत रूप से इन्हीं स्मृतियों को समर्पित है। हमारी ई - पत्रिका ने हमेशा प्रयास किया है कि छात्राओं को प्रोत्साहित करती रहे और उनमें छुपी सृजनात्मकता को तथा नेतृत्व तथा प्रबंधन को अवसर प्रदान करती रहे। "आपकी बात" हमारे लिये अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है। कृपया अपनी बात हम तक पहुँचाते रहें। हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका को आप हमारे महाविद्यालय के वेब साइट www.knwcbbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ.स .
1.	उत्कल दिवस	लेख	संग्रहित	5
2.	शांतिनिकेत	लेख	संग्रहित	7
3.	मेरे संस्मरण	संस्मरण	पिंकी सिंह	13
4.	शांतिनिकेतन के भित्तिचित्र	लेख	हाफिज़ा बेगम	16
5.	सोनाझुरी हाट	लेख	स्तुति प्रज्ञा	17
6.	यादें	संस्मरण	सुहाना परवीन	22
7.	गुरु देवो नमः	लेख	शरीफा शरवारी	23
8.	पुलवामा का वीर	कविता	शरीफा शरवारी	24
9.	शाँतिनिकेतन	यू ट्यूब लिंक		25
10.	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ	यादों के गलियारों से	26

उत्कल दिवस

1 अप्रैल 1936, को ओडिशा, भारत (Odisha, India) में उन ओडिशा के इतिहास के लोगों को याद किया जाता जिन्होंने ओडिशा को आगे ले जाने और सफल बनाने के लिए अपना बहुत बड़ा योगदान और बलिदान दिया था। इस दिन को **उत्कल दिवस / ओडिशा दिवस (Utkal Diwas / Odisha Day)** के नाम से मनाया जाता है।

उत्कल दिवस ना सिर्फ भारत के अलग-अलग राज्यों में मनाया जाता है बल्कि यह एनी देशों में भी मनाया जाता है जहाँ ओडिशा के लोग रहते हैं।

प्राचीन काल में ओडिशा राज्य / क्षेत्र, कलिंग राज्य का केंद्र था इसलिए आज भी ओडिशा को **कलिंग राज्य** के नाम से जाना जाता है। सम्राट अशोक ने कलिंग राज्य में ज्यादा दिन तक राज्य नहीं किया। बाद में कई सालों तक मौर्य साम्राज्य ने कलिंग प्रदेश पर राज्य किया था।

कलिंग साम्राज्य के धीरे-धीरे पतन होते समय कई हिन्दू राजवंश ओडिशा में उभरे और उन्होंने **ओडिशा के कई जगहों जैसे** पूरी, **भुबनेश्वर, और कोणार्क** में कई सुन्दर और भव्य मंदिरों का निर्माण किया था।

ओडिशा में लम्बे समय तक मुसलमानों के प्रतिरोध के बाद सन 1568 को अफगानों ने आक्रमण करके मुग़लों को खदेड़ दिया। मुगलों के पतन के बाद ओडिशा बंगाल के नवाबों और मराठों के बिच दो भाग में बंट गया।

सन **1803 में उड़ीसा राज्य पर ब्रिटिश लोगों** ने कब्ज़ा कर लिया।

सन 1936 में उड़ीसा, Orissa के एक अलग राज्य के रूप में निर्माण किया गया। 1950 में उड़ीसा भारत का संघटक राज्य बन गया। बाद में वर्ष 2011 में उड़ीसा को ओडिशा (Orissa to Odisha)के नाम से संविधान में संशोधन किया गया। साथ ही ओरिया भाषा को भी ओडिया (Oriya to Odia) में बदला गया।

शांतिनिकेत

विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना 1921 में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने पश्चिम बंगाल के शान्तिनिकेतन नगर में की। यह भारत के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है। अनेक स्नातक और परास्नातक संस्थान इससे संबद्ध हैं।

शान्ति निकेतन के संस्थापक रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 1861 ई में कलकत्ता में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुरने 1863 ई में अपनी साधना हेतु कलकत्ते के निकट बोलपुर नामक ग्राम में एक आश्रम की स्थापना की जिसका नाम `शांति-निकेतन' रखा गया। जिस स्थान पर वे साधना किया करते थे वहां एक संगमरमर की शिला पर बंगला भाषा में अंकित है--`तिनि आमार प्राणेद आराम, मनेर आनन्द, आत्मार शांति।' 1901 ई में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसी स्थान पर बालकों की शिक्षा हेतु एक प्रयोगात्मक विद्यालय स्थापित किया जो प्रारम्भ में `ब्रह्म विद्यालय,' बाद में `शान्ति निकेतन' तथा 1921 ई। `विश्व भारती' विश्वविद्यालय के नाम से प्रख्यात हुआ। टैगोर बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे।

शांतिनिकेतन का जन्म

गुरु-शिष्य सम्बन्धों पर विचार करते हुए टैगोर ने आधुनिक किशोर की समस्याओं का सहृदयता से अध्ययन किया और अपना दृढ़ मत व्यक्त किया कि शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त अनुशासनहीनता को दूर करने के लिए जेल और मिलिट्री की बैरकों का कठोर अनुशासन काम नहीं दे सकता, यह तो अध्यापकों की प्रतिष्ठा पर भी आघात होगा। विद्यार्थियों से यह आशा करना ही गलत है वे अध्यापकों से वैसा ही व्यवहार करें जैसा किसी सामन्त के दरबारी करते हैं। टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा में आदान-प्रदान की प्रक्रिया यदि पारस्परिक सम्मान की भावना से युक्त हो तो अनुशासन की समस्या स्वयमेव सुलझ जाएगी।

ज्ञान का समाज के हर वर्ग में फैलाना अतीत की शिक्षा का एक आदर्श था। धर्म ग्रन्थों और महाकाव्यों के अंशों का वाचन, भक्त ध्रुव, सीता वनवास, दानवीर कर्ण, सत्यवादी हरिशचन्द्र, आदि नाटक (जात्रा) इसी उद्देश्य से किए जाते थे। यह उत्तम प्रकार की समाज शिक्षा थी। पर अंग्रेजी शिक्षा का लाभ अधिकांश नगरों तक ही सीमित रहा और शेष देश के असंख्य गाँव अशिक्षा, रोग और क्षय के अन्धकार में विलीन होते गए। इस स्थिति को सुधारना चाहिए।

विश्व भारती की स्थापना

गाँधीजी विश्वभारती में (1940 में)

टैगोर शान्ति निकेतन विद्यालय की स्थापना से ही संतुष्ट नहीं थे। उनका विचार था कि एक ऐसे शिक्षा केन्द्र की स्थापना की जाए, जहाँ पूर्व और पश्चिम को मिलाया जा सके। सन् 1916 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विदेशों से भेजे गए एक पत्र में लिखा था-

> "शान्ति निकेतन को समस्त जातिगत तथा भौगोलिक बन्धनों से अलग हटाना होगा, यही मेरे मन में है। समस्त मानव-जाति की विजय-ध्वजा यहीं गड़ेगी। पृथ्वी के स्वादेशिक अभिमान के बंधन को छिन्न-भिन्न करना ही मेरे जीवन का शेष कार्य रहेगा।"

अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए टैगोर ने 1921 में शान्तिनिकेतन में '**यत्र विश्वम भवत्येकनीडम**' (सारा विश्व एक घर है) के नए आदर्श वाक्य के साथ विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की। तभी से यह संस्था एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में ख्याति प्राप्त कर रही है।

उद्देश्य

(1) विभिन्न दृष्टिकोणों से सत्य के विभिन्न रूपों की प्राप्ति के लिए मानव मस्तिष्क का अध्ययन करना।

- (2) प्राचीन संस्कृति में निहित आधारभूत एकता के अध्ययन एवं शोध द्वारा उनमें परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना।
- (3) एशिया में व्याप्त जीवन के प्रति दृष्टिकोण एवं विचारों के आधार पर पश्चिम के देशों से संपर्क बढ़ाना।
- (4) पूर्व एवं पश्चिम में निकट संपर्क स्थापित कर विश्व शान्ति की संभावनाओं को विचारों के स्वतंत्र आदान-प्रदान द्वारा दृढ़ बनाना।
- (5) इन आदर्शों को ध्यान में रखते हुए शान्ति निकेतन में एक ऐसे सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना करना जहाँ धर्म, साहित्य, इतिहास, विज्ञान एवं हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुस्लिम, सिख, ईसाई और अन्य सभ्यताओं की

कला का अध्ययन और उनमें शोधकार्य, पश्चिमी संस्कृति के साथ, आध्यात्मिक विकास के अनुकूल सादगी के वातावरण में किया जाए।

विभाग

- (1) **पाठ भवन** - इसमें स्कूल सर्टिफिकेट (मैट्रिक परीक्षा) उत्तीर्ण करने के लिए शिक्षा दी जाती है तथा 6 से 12 वर्ष की आयु के बालकों को प्रवेश दिया जाता है। शिक्षा का माध्यम बंगाली है।

- (2) **शिक्षा भवन** - इसमें सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट (इन्टर परीक्षा) की परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए शिक्षा दी जाती है। छात्रों की आवश्यकताओं पर व्यक्तिगत ध्यान तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य सहगामी क्रियाओं की प्रचुर मात्रा में व्यवस्था शिक्षा भवन की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

- (3) **विद्या भवन** - इसमें 3 वर्ष की बी.ए. (आनर्स) पाठ्यक्रम की तैयारी कराई जाती है। परीक्षा के विषय संस्कृत, बंगाली, हिन्दी, उड़िया, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र और दर्शन है। भवन में दो वर्ष के एमए. पाठ्यक्रम की व्यवस्था संस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, बंगाली, हिन्दी, उड़िया, अंग्रेजी तथा दर्शन में है। छात्र इन विषयों में अनुसंधान कार्य भी कर सकते हैं। दो वर्षीय सार्टिफिकेट्स कोर्स, तत्पश्चात एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स का अतिरिक्त
  प्रबन्ध संस्कृत, बंगाली, हिन्दी, उड़िया, चीनी, जापानी, तिब्बती, फ्रेंच, जर्मन, अरबी और अंग्रेजी भाषाओं में किया गया है।

- (4) **विनय भवन** - यह एक अध्यापक प्रशिक्षण कॉलेज है जिसमें एक वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की व्यवस्था है। प्रशिक्षण काल में शिल्प तथा अन्य व्यावहारिक एवं रचनात्मक क्रियाओं की शिक्षा का भी प्रबन्ध किया जाता है।

विश्वभारती का कलाभवन

- (5) **कला भवन** - इसमें ड्राइंग, पेंटिंग, मूर्ति कला, कढ़ाई आदि के अतिरिक्त काष्ठ कला, कलात्मक चर्म-कार्य तथा अन्य शिल्पों की शिक्षा भी दी जाती है। कला भवन में कलात्मक शिल्पों में दो वर्षीय सर्टिफिकेट कोर्स तथा मैट्रिक परीक्षा के पश्चात 4 वर्षीय डिप्लोमा कोर्स की व्यवस्था है।

- (6) **संगीत भवन** - इसमें संगीत में (क) 3 वर्षीय इंटरमीडिएट परीक्षा का पाठ्यक्रम, (ख) तत्पश्चात रवीन्द्र संगीत, हिन्दुस्तानी संगीत, सितार, मणिपुरी नृत्य, कत्थक, कथाकली और भरतनाट्यम में 2 वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम की व्यवस्था है।

- (7) **चीन भवन** - इसमें भारतीय छात्रों को चीन सम्बन्धी और चीनी छात्रों को भारतीय संस्कृति की शिक्षा दी जाती है।

- (8) **हिन्दी भवन** - इसमें हिन्दी भाषा की शिक्षा तथा अनुसंधान कार्य करने की सुविधाएं है।

- (9) **हिन्द-तिब्बती शिक्षालय** - इसमें तिब्बती भाषा की शिक्षा का प्रबन्ध है।

- (10) **श्री निकेतन** - इसमें ग्राम्य जीवन की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य छात्रों को ग्राम्य जीवन से परिचित करवाना तथा ग्राम्य समस्याओं के समाधान की शक्ति पैदा करना है। श्री निकेतन में ग्रामीण बालकों को माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षा सत्र की स्थापना की गई है। घरेलू उद्योग-धन्धों के प्रशिक्षण का कार्य शिल्प सदन द्वारा किया जाता है।

इसके अतिरिक्त 'शिक्षा चर्चा' नामक एक संस्था और है जो बेसिक अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय के रूप में कार्य करती है तथा भारत सरकार द्वारा स्थापित ग्रामीण महाविद्यालय उच्च ग्रामीण शिक्षा की व्यवस्था करती है।

विश्व भारती की विशेषताएँ

- (1) स्वयं गुरुदेव रवीन्द्र ने विश्व भारती की विशेषता का उल्लेख इन शब्दों में किया -
  "विश्व भारती भारत का प्रतिनिधित्व करती है। यहाँ भारत की बौद्धिक सम्पदा सभी के लिए उपलब्ध है। अपनी संस्कृति के श्रेष्ठ तत्व दूसरों को देने में और दूसरों की संस्कृति के श्रेष्ठ तत्व अपनाने में भारत सदा से उदार रहा है। विश्व भारती भारत की इस महत्वपूर्ण परम्परा को स्वीकार करती है।"

  - (2) कोई छात्र किसी एक विभाग में प्रवेश पाने के पश्चात् किसी दूसरे विभाग में भी बिना कोई अतिरिक्त शुल्क दिए शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

  - (3) विदेशी छात्रों को नियमित छात्र के रूप में या अस्थाई छात्र के रूप में भी प्रवेश दिया जा सकता है।

  - (4) ड्राइंग, पेंटिंग, मूर्ति कला, चर्म कार्य, कढ़ाई, नृत्य, संगीत आदि ललित कलाओं में तथा चीनी और जापानी भाषाओं में शान्ति निकेतन ने विशेष ख्याति प्राप्त की है। इन क्षेत्रों में शान्ति निकेतन का योगदान विशिष्ट है।

- (5) खुले मैदानों में या वृक्षों के नीचे प्रकृति के सान्निध्य में और स्वतंत्र वातावरण में शिक्षा दी जाती है।

- (6) गुरुशिष्य के आदर्श सम्बन्धों को पुन: स्थापित किया जा रहा है।

- (7) विश्वविद्यालय का पुस्तकालय बहुत प्रसिद्ध है जहाँ लगभग **दो लाख** पुस्तकों का संग्रह है।

विश्व भारती महर्षि रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का मूर्तमान स्वरूप है। यहाँ खुले गगन के नीचे वृक्षों व कुंजों के झुरमुटों में पृथ्वी पर बैठकर देश-विदेशों से आकर असंख्य विद्यार्थी धर्म, दर्शन, साहित्य एवं कला का उच्च अध्ययन करते हैं। प्राच्य व पाश्चात्य संस्कृतियों के सम्मिश्रण में इस संस्था ने बड़ा योग दिया है। सात्विक व सादा जीवन, प्रकृति से संपर्क, प्राचीन व आधुनिक शिक्षा पद्धतियों का एकीकरण आध्यात्मिक व भौतिक शिक्षा पर समान बल एवं सांस्कृतिक उत्थान इत्यादि इस संस्था की अपनी विशेषताएँ हैं। भारत की शिक्षा के इतिहास में यह एक नूतन व महान परीक्षण माना जाता है।

प्रमुख व्यक्तित्व

देवेन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा सन 1963 में बनवाया गया **उपासना गृह**

पौष मेला (सन् 2012)

- सावित्री देवी
- सत्यजीत राय
- अमर्त्य सेन
- इंदिरा गांधी
- गायत्री देवी
- अवनीन्द्रनाथ टैगोर
- नंदलाल बोस
- बिनोद बिहारी मुखर्जी
- रामकिंकर बैज, मूर्तिकार एवं चित्रकार
- के जी सुब्रमण्यन, चित्रकार
- प्रभात मोहन बंधोपाध्याय, चित्रकार, कवि, एवं सामाजिक कार्यकर्ता
- कणिका बंधोपाध्याय, गायक
- सुचित्रा मित्र, गायक
- भीमाराव हौसकर शास्त्री, संगीतकार
- गौर गोपाल घोष, मोहन बागान के खिलाडी
- गुरु केलू नायर, कथकली के उस्ताद
- शांतिदेव घोष, गायक एवं नर्तक
- सैय्यद मुज्तबा अली, बांग्ला उपन्यासकार
- सिल्वियन लेवी, भारतीय मामलों के विद्वान
- तान युन शान, चीनी विद्वान

मेरे संस्मरण

जब हम किसी पौधे को लगाते हैं तो उसे बड़ी मेहनत से सींच कर, उसके सूखे पत्ते तोड़ कर, सूरज के आलोक से सजाकर उसके बड़े होने का इंतजार करते हैं। हमारा इंतजार तब खत्म होता है जब उस पौधे में एक नई उम्मीद जन्म लेने लगती है।

एक छोटे से बच्चे को बड़ा करना और एक पौधे को बड़ा करने में कोई अंतर नहीं होता। पर बच्चे होकर क्या उपकार और क्या अपकार करते हैं ये नहीं कहा जा सकता लेकिन एक पेड़ बड़ा हो कर हर हालत में हमारा उपकार ही करता है, यह निश्चित है।

कोलकाता से आए हुए बहुत समय हो चुका है। और लिखने को तो बहुत कुछ लिखा जा सकता था। वो हर एक अनुभव को व्यक्त कर सकती थी जो मेरे मन में कहीं घाव और कहीं सुनहरी यादों के समान बिखरे पड़े हैं और कुछ इंसानों का और उनके व्यक्तित्व पर से नकाब को खोल सकती थी जिसको मैंने देखा है, अनुभव किया है। पर आज नहीं तो कल, मेरे लिखने या ना लिखने से एक दिन उनके बारे में पता चल ही जाएगा। इसीलिए मैंने इंसानों को छोड़ प्रकृति को लिखने का निर्णय लिया है। वो बात अलग है कि मनुष्य प्रकुति का ही एक अंश है। और उससे कहीं आगे भी बढ़ चुका है यहाँ तक कि उसके पतन की सारी तैयारी कर चुका है। क्योंकि सफर के आरंभ से लेकर उसके अंत तक एक प्रकृति ही है जिसने मुझे वास्तविक आनंद प्रदान किया है।

जब हम शनिवार 6 बजे ट्रेन में हावड़ा के लिए रवाना हुए तब औरों की तरह प्रकृति भी ओस की चादर ओढ़े सौ रही थी। जैसे जैसे सूरज उगता हुआ आसमान की उच्चाई को छूता जा रहा था, ओस की चादर भी कहीं खोती जा रही थी। सूरज को आगे बढ़ते देख प्रकृति की हर

वस्तु गर्व से चमक रही थी। इंसान भी चमक रहा था पर वो सूरज के चमकता हुआ ताप को सहन ही नहीं कर पा रहा था। इसीलिए सर्दी में भी उसे छाया की आवश्यकता थी। इंसानों के लिए यह कोई नई बात नहीं है की दूसरों को चमकता हुआ देख कर वो स्वयं जल उठते हैं।

जाते समय ट्रेन में मस्ती हुई, खाना पीना हुआ। समय तो याद नहीं पर कुछ देर बाद गन्दगी का एहसास हुआ। मन में चिढ़ सी मच गई। सोचा, अगर रास्ता इतना खराब है तो कोलकाता की अवस्था कैसी होगी?? पर मुझे बहुत देर में मालूम हुआ कि यह खड़गपुर है और यहाँ गंदगी होती ही है। उस जगह को देखने के बाद एक बात का बहुत बुरा लगा कि हमारे देश में जहाँ पानी के लिए मारामारी चल रही है। प्रायः हर जगह साफ पानी के लिए मिट्टी को खोदा जा रहा है या फिर कोसों चल के साफ पानी का जुगाड़ करना पड़ता है। परंतु वहाँ पानी को सरे आम नष्ट किया जा रहा था। एक ओर देश में पानी का अभाव है और दूसरी ओर पानी को यूँही खुला छोड़ दिया जाता है। जिस में सूखे पत्ते, मृत शव, प्लास्टिक वस्तुओं को फेंक कर उसको इस कदर दूषित कर दिया जाता है कि वो पीने की योग्य नहीं रहता ।

समय यूँही बीतता गया। फिर ट्रेन में हमारे मैडम, सर बच्चे सब अंताक्षरी खेल खेलने में लग गए। जिसमें मैं भी थोड़ा बहुत शामिल थी। क्योंकि उस वक्त तक हम लगभग कोलकाता में पहुँच गए थे और मेरी आँखें, मेरा मन, मस्तिष्क सब अंताक्षरी में नहीं बल्कि झरोखे के बाहर मैं उन खेतों को देख रही थी जहाँ मौसम का जादू लिए गेंदे के फूल हर कहीं अपना रंग बिखेर रहें थे। हर एक खेत में कई प्रकार के गेंदे के फूल खिले हुए थे। विभिन्न प्रकार के विभिन्न आकृति के। जैसे कोलकाता में प्रकृति ने हमारे स्वागत के लिए इन फूलों को सजाया हो। और फूल भी हमारे आने की खुशी में हवा की तरंगों के साथ नाच रहे हों। ट्रेन में बैठे बैठे यह इच्छा हो रही थी कि जाऊ और उन फूलों को एक बार छू कर आऊ। क्योंकि फूलों को उनके पेड़ से अलग करना, ये मरा स्वभाव नहीं है।

हमारे मैडम 'लॉ ऑफ अटरैक्शन' में विश्वास रखती हैं और मैं भी। फूलों को करीब से देखने की इच्छा और भी सजग हो उठी जब हम टोटो में श्रीनिकेतन घूमने के लिए निकले। वहाँ हर एक घर को फूलों से इस कदर सजाया गया था जैसा फिल्मों में दिखाया जाता है, ये देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। उस दिन ट्रेन दो घंटे लेट थी और हमें ज्यादा घूमने का मौका मिला। लेकिन इस समय का लाभ उठाते हुए हम कहीं और नहीं अपितु शांतिनिकेतन के हिंदी भवन के प्रोफेसर हरिश्चंद्र मिश्रा सर जी के घर गए। उनका घर, उनका बगीचा, उनका आतिथ्य और वो स्वयं भी काबिले तारीफ़ है। इस लेख के माध्यम से मैं उन को धन्यवाद देती हूँ। वहाँ का सौंदर्य का शायद ही मैं वर्णन कर सकूं। लेकिन मेरे इस लेख से जो वहाँ नहीं जा पाए उनके मन इसे देखने की इच्छा अवश्य जागृत होगी। उसी जगह मुझे एक बात जो और अच्छी लगी वो थे संजू मंजू नामक दो खरगोश। दिल जीत लिया उन दोनों ने। खास करके संजू। इस दुनिया में जहाँ इंसान एक दूसरे का साथ देने में झिझकते हैं। वहीं जानवर उन रिश्तों को खूब समझते हैं शायद

इसीलिए वो दोनों साथ में थे और हमें देख उन में हलचल मच गई। इच्छा तो उन दोनों को पकड़ने की थी। पर संजू बहुत शरारती है। न हमारे पकड़ने में आया और न अपनी पत्नी को पकड़ने दिया। जब हम उसे पकड़ नहीं पाए तो हमारा ध्यान मंजू की ओर गया और मंजू को कोई परेशानी न हो इसलिए संजू अपना लोभ दिखा कर हमें मंजू से दूर ले गया और इतने में मंजू कहीं छुप गई थी। उन दोनों की बहुत याद आती है। काश फिर से उन दोनों से मुलाकात हो जाए।

खैर जो भी हो, वहाँ की यादें, वातावरण और वहाँ के लोगों को मैं कभी नहीं भूल सकती। मेरे मन में हमेशा हमेशा के लिए जिंदा रहेगी वो यादें।

पिंकी सिंह, +3 तृतीय वर्ष

शांतिनिकेतन के भित्तिचित्र

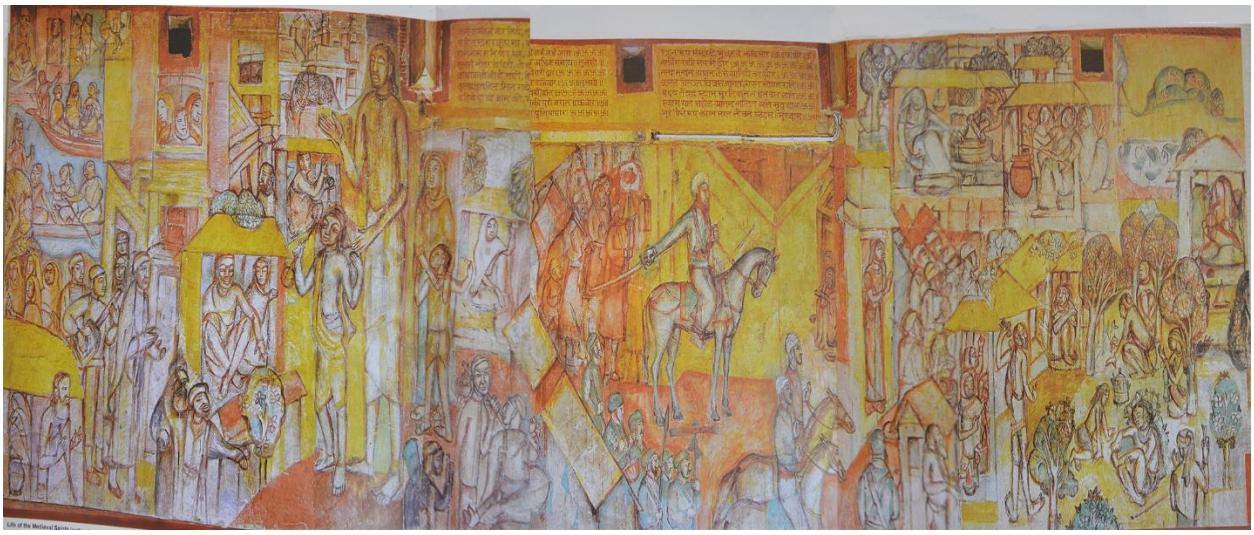

हमारे हिंदी विभाग के सारे विद्यार्थी शांतिनिकेतन गए थे। जब हम बोलपुर से शांतिनिकेतन के को भ्रमण करने गए और मैं वहाँ के परिवेश को देखकर मुग्ध हो गयी। मैंने वहाँ बहुत सारी ऐसी चीजें देखी जिससे में आश्चर्यचकित हो गई। हमनें सबसे पहले वहाँ के विद्यालयों को देखा जहाँ पर खुले परिवेश में पेड़ों के नीचे विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता हैं। वहां शांति का परिवेश था। लोगों का आना जाना था पर विद्यार्थियों को कोई परेशानी नहीं हो रही थी। हम लोगों ने भी उस परिवेश का भरपूर आंनद लिया। उन पेड़ों के नीचे बैठ ऐसा लग रहा था कि हम हमेशा के लिए वहीं रह कर पढें। उसके बाद हम लोग हिंदी भवन गए, वहां पर हमारा स्वागत विश्वभारती हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष रवींद्रनाथ सर ने किया और वहां विभाग के अन्य शिक्षकों से भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हिन्दी भवन में एक संगोष्ठी आयोजित हुई जहाँ हम लोगों को विश्वभारती एवं शांतिनिकेतन के बारे में बताया गया। जिस कमरे में यह संगोष्ठी आयोजित हुई थी, वहां के दीवारों पर भित्तिचित्र बने हुये थे। उस दीवारों को देखकर मैं मुग्ध हो गयी। क्योंकि वह चित्र ऐसे बारीके से बने थे कि मैं उस चित्रों को देखती रह गई। वहाँ की वरिष्ठ अध्यापिका मंजू दीदी ने हमें बताया कि ये चित्र हरी सब्जियों, फलों और फूलों के रस से बने नैसर्गिक रंगों से बना हुये हैं। मैं यह बात सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी मैं दुविधा में थी कि क्या सच में ऐसे चित्र बन सकते हैं। मंजू दीदी ने बताया कि ये भित्तिचित्र नष्ट न हो जाये इसलिए उस कमरे में पँखे की हवा, तेज रोशनी और यहाँ तक कि ऊँची आवाजें भी वर्जित है। दीवारों पर हिंदी साहित्य के आदिकाल एवं मध्यकाल के कवियों और संतों के चित्र बने थे। हम

उस चित्र को कभी नहीं भूल सकती क्योंकि वे इतने खूबसूरत लग रहे थे कि अगर कोई चाहे तो भी भुल नहीं सकता। जब भी कोई अच्छा कार्य करे तो हम उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए ताली बजाते हैं किन्तु शांतिनिकेतन में ऐसा नहीं होता, अगर वहां कोई अच्छी बात करते हैं तथा भाषण देते हैं तो वहाँ साधु! साधु!! बोलते हैं। क्योंकि वहां पर ज्यादा आवाज़ से बात नहीं करते हैं। मुझे बहुत ही अच्छा लगा वहां पर। मैं अपनी अध्यापिका को धन्यवाद देना चाहती हूं कि आप मुझे वहां ले कर गए क्योंकि अगर मैं नहीं जाती तो मुझे पता नहीं चलता कि भित्तिचित्र क्या होते हैं। धन्यवाद मैडम आपकी वजह से मैं वहाँ बहुत कुछ सीख पाई! धन्यवाद मैडम!!

हफिजा बेगम, +3 द्वितीय वर्ष

बिनोदबिहारी मुखर्जी

बिनोदबिहारी मुखर्जी के भित्ति-चित्रण भारत के मध्यकालीन संत कवियों के जीवन पर आधारित हैं, जो पूरी तरह से अलग मुकाम पर हैं। 1946 और 1947 के बीच चित्रित (जितेंद्र कुमार, लीला मुखर्जी, देवकी नंदन शर्मा और के.जी.सुब्रमण्यन के सहयोग से) हिंदी भवन की तीन दीवारों पर भित्ति लगभग अस्सी फीट लंबाई की है। एक कमरे के ऊपरी आधे हिस्से को फैलाकर और एक लंबी ट्रैकिंग फिल्म की शूटिंग की तरह इसकी तीन दीवारों पर चल रही है, यह भारतीय अतीत की एक विस्तृत व्याख्या के रूप में प्रस्तुत करता है। यकीनन, यह आधुनिक भारत का सबसे महत्वाकांक्षी भित्ति चित्र हैं।

रामानुजाचार्य

तुलसीदास

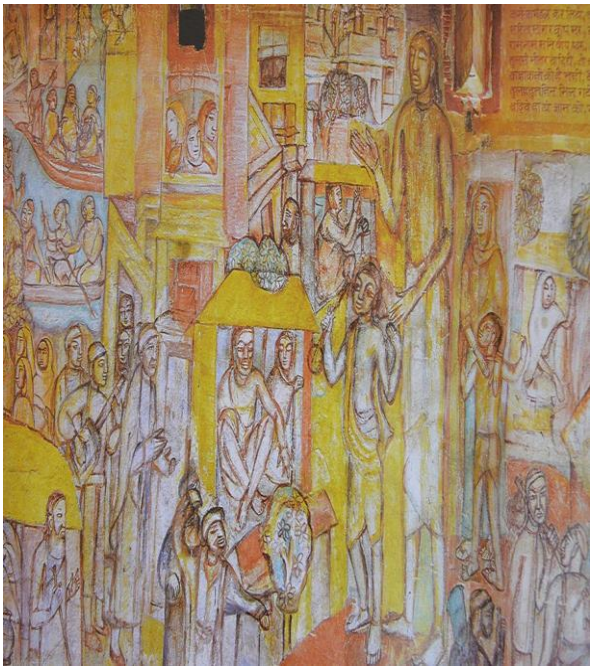

सूरदास

कबीरदास

दोल जात्रा

दोल जात्रा में राधा-कृष्ण की पूजा की जाती है।

दोल जात्रा या दोल उत्सव बंगाल में होली से एक दिन पहले मनाया जाता है। इस दिन महिलाएँ लाल किनारी वाली पारंपरिक सफ़ेद साड़ी पहन कर शंख बजाते हुए राधा-कृष्ण की पूजा करती हैं और प्रभात-फेरी (सुबह निकलने वाला जुलूस) का आयोजन करती हैं। इसमें गाजे-बाजे के साथ, कीर्तन और गीत गाए जाते हैं। दोल शब्द का मतलब झूला होता है। झूले पर राधा-कृष्ण की मूर्ति रख कर महिलाएँ भक्ति गीत गाती हैं और उनकी पूजा करती है। इस दिन अबीर और रंगों से होली खेली जाती है। इस दोल यात्रा में चैतन्य महाप्रभु द्वारा रचित कृष्ण-भक्ति संगीत की प्रचुरता रहती है। प्राचीन काल में इस अवसर पर ज़मीदारों की हवेलियों के सिंहद्वार आम लोगों के लिए खोल दिये जाते थे। उन हवेलियों में राधा-कृष्ण के मंदिर में पूजा-अर्चना और भोज चलता रहता था। किंतु समय के साथ इस परंपरा में बदलाव आया है।

शांतिनिकेतन की होली का ज़िक्र किये बिना दोल उत्सव अधूरा है। काव्यगुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर ने वर्षों पहले वहाँ बसंत उत्सव की जो परंपरा शुरू की थी, वो आज भी जैसी की तैसी है। विश्वभारती विश्वविद्यालय परिसर में छात्र और छात्राएँ आज भी पारंपरिक तरीक़े से होली मनाती हैं। लड़कियाँ लाल किनारी वाली पीली साड़ी में होती हैं। और लड़के धोती और कुर्ता पहनते हैं। वहाँ इस आयोजन को देखने के लिए बंगाल ही नहीं, बल्कि देश के दूसरे हिस्सों और विदेशों तक से भी भारी भीड़ उमड़ती है। इस मौक़े पर एक जुलूस निकाल कर अबीर और रंग खेलते हुए विश्वविद्यालय परिसर की परिक्रमा की जाती है। इसमें अध्यापक भी शामिल होते हैं। रवीन्द्रनाथ की प्रतिमा के पास इस उत्सव का समापन होता है। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। शांतिनिकेतन और कोलकाता-स्थित रवीन्द्रनाथ के पैतृक आवास, जादासांको में आयोजित होने वाला बसंत उत्सव बंगाल की सांस्कृतिक पहचान बन चुका है।

सोनाझुरी हाट

सोनाझुरी हाट जो कि बोलपुर, शांतिनिकेतन में स्थित है। वहाँ हर सप्ताह के शनिवार और रविवार को यह हाट लगता है। दूर दूर से लोग इस हाट को देखने और खरीदने को भी आते हैं। इस हाट की यह खासियत है कि उस हाट में सूत एवं रेशम की साड़ी, कपड़े, आभूषण, लकड़ी से बनी घर सजाने की वस्तुएं मिल रही थी, जिसमें पश्चिम बंगाल की लोक कला अपनी जिसे देखकर हरेक नर नारी, बच्चे उसकी ओर खींचे चले आते हैं। हाट में पसरी चीजों का मन करता था कि ये सब ले लूं। यह दिनभर लगती है और सूर्यास्त होने से पहले दुकानदार अपना सामान उठाकर ले जाते हैं, यानी कि घर चले जाते हैं। हम सब भी सोनाझुरी हाट गए थे। वहां हम ऑटो, रिक्शा, कार या बस से नहीं बल्की बैट्री से चलती हुई गाड़ी टोटो से गए थे। बड़ा ही मज़ा आया। वहाँ पहुँचते ही हम सब वह हाट को देखकर खुशी से चिल्लाने लगे। खुशी के मारे पागल हो गए। फिर हमने वहाँ, अपने लिए और घर के लिए सामान देखने और खरीदने लगे। मैं और शताब्दी हम दोनों को हमारे घरवालों ने कहा था कि हमेशा मैडम के साथ ही रहना और पूरे सफ़र के दौरान हम वेदुला मैडम के साथ ही थे, फिर भी हाट में मन में एक डर भी था कि कहीं हम खो न जाए। मैडम ने अपने लिए साड़ी और कुछ आदिवासी गहने लिए, उनका जो चॉइस है वह गज़ब का है। फिर वहाँ मैं अपने मम्मी के लिए गहने लिये, खुद के लिए दो और दीदी के लिए एक कुरते लिये। मुझे मोलभाव करना बहुत अच्छा लगता है। जहाँ जाती हूँ वहाँ मोलभाव करती हूं। बस मैं वहाँ भी शुरु हो गयी। उस दुकानदार के साथ मीठी मीठी बातें और मोलभाव करके चार गहने लेके आ गयी। बाद में दुकानदार कहता है कि दीदी हँस हँसकर, बात करके चार नैक पीस तो ले लिए वह भी इतने कम पैसे में। मैं वहाँ से हँसकर निकल गयी। फिर पीछे देखी की कुछ नाच गाना हो रहा है पता लगाया तो मालूम हुआ कि वहाँ के रहने वाले आदिवासी लोग नृत्य करते हैं, जिसमें दस लोग थे, जिनमें से सात औरतें जो कि पीली और लाल रंग के साड़ी पहने हुई थी और पुरुष सफ़ेद धोती पहने हुए थे। औरतें नाच रही थी और पुरुष लोक वाद्य बजा रहे थे। वे हर हाट में आते हैं और अपना नृत्य का कला को दिखाते हैं। हम सब जितने भी गए थे, जैसे कि दीदियाँ, फर्स्ट ईयर की लड़कियाँ, शताब्दी, सब नाचने लगे। साथ मे हमारी वेदुला मैडम और मनोरमा मैडम भी नाचने लगे। अंधेरा होने लगा था, उसके बाद भी मोबाइल का फ्लैशलाइट लगाकर नाच रहे थे, सब पूरे नाचने में मग्न थे उस बीच मे अपने मम्मी के लिए एक साड़ी देखते ही मुझे पसंद आ गई और हर हाल में मुझे वो लेना था। उस साढ़ी का दाम 900 रुपये था, मैं उनके साथ इतना मोलभाव किया कि अंत में मैं अपनी चप्पल निकाले औए उनके दुकान के सामने बैठ गयी। फिर मैं बोली कि दादा देखो न आपका न मेरा

400 में देदो। मैं इतनी दूर से आई हूं, उड़ीशा से आई हुँ, स्टूडेंट हूँ इतने पैसे नहीं है मेरे पास। मुझे यही वाला साड़ी चाहिए। संध्या लगभग हो ही रही थी, दुकानदार अपना सामान पैक करने में लग गया और मैं वो साड़ी को ऐसे ही पकड़ के बैठी रही, उसके बाद दुकानदार ने कहा चलो दीदी 400 दो और ले लो जल्दी से, बड़ी जिद्दी हो तुम। जब लेके आयी मुझे उस दुकानदार ने कहा देखो दीदी एक ही साड़ी बची थी और रात हो रही है करके मैंने आपको दे दिया और अभी आप अपने सारे दोस्तों को लेके चली मत आना, नहीं तो आज मेरा पूरा नुकसान हो जाएगा। मैं हाँ दादा धन्यवाद कह के आ गयी। उसके बाद जहाँ नृत्य हो रहा था वहाँ गयी देखी, मज़े की, फिर हम सब टोटो में बैठकर अपने होटल की ओर निकल गए। सच बताऊँ मेरे को बहुत अच्छा लगा, बहुत मज़े किये वहाँ और शांतिनिकेतन जैसी जगह देखकर बहुत अच्छा लगा।

स्तुति प्रज्ञा, +3 द्वितीय वर्ष

यादें,,,

हिंदी विभाग के सारे विद्यार्थी यानी के हिंदी विभाग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ष की छात्रायें अध्ययन भ्रमण में बोलपुर के शांतिनिकेतन गए थे। शांतिनिकेतन में मैडम हम सबको हिंदी भवन लेकर गई थीं। हिंदी भवन में हम सब विद्यार्थी हिंदी भवन का परिभ्रमण किये और हिंदी भवन के पुस्तकालय का भी परिभ्रमण किया और वहां की किताबों के बारे में जानकारी प्राप्त की। वहां बहुत सी प्राचीन और महत्वपूर्ण किताबें थी। हम सब विद्यार्थी मैडम के साथ संग्रहालय गए, वहां रवीन्द्रनाथ टैगोर के बारे में बहुत सी जानकारी हासिल की। संग्रहालय में हमने रवीन्द्रनाथ टैगोर जी की इस्तेमाल की गई चीजों को देखा। रवीन्द्रनाथ जी के परिवार सहित तस्वीर देखे, उनके लेख देखे और उनके जीवन चरित का ज्ञान हासिल किया। संग्रहालय को देख चुकने के बाद हम सब सोनाझुरी हाट गए थे वहां से की बहुत सी चीजें खरीदे। सोनाझुरी हाट में पारंपरिक नृत्य हो रहा था, उसमें हम सब विद्यार्थी मैडम सहित उस नृत्य में उनका साथ देते हुए नृत्य का आनंद उठाये। अगले दिन हम सब शाँतिनिकेतन के मुख्य पुस्तकालय गये। शाँतिनिकेतन का मुख्य पुस्तकालय बहुत बड़ा था, वहां बहुत सारी किताबें थी। शाँतिनिकेतन में हमने रवीन्द्रनाथ टैगोर जी की समाधि 'छातिमतला' के भी दर्शन किये।

सुहाना परवीन, +3 द्वितीय वर्ष

गुरु देवो नमः

शाँतिनिकेतन के टोटो जिस पर बैठ कर हम प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे। टोटो पर बैठ कर जाते समय चारों दिशाओं में पेड़ ही दिख रहे थे। उन पेड़ों को छूकर चेहरे पर ठंडी हवा का आकर लगना जैसे लग रहा था जैसे सोए हुए को जगा रहा हो। ऐसे में मन कर रहा था इतने सारे पेड़ हैं काश मैं उन पेड़ सब के नाम जान पाती। जानने की कोशिश तो की मगर असमर्थ ही रहीं। एक बात मुझे बहुत पसंद आई कि हर घर के आँगन में कोई ना कोई पेड़ जरूर लगा था। हर कोई बंगाली में ही बात कर रहे थे, जो सुनने को बहुत ही अच्छा लग रहा था। इस तरह हम प्रकृति का आनंद ही ले रहे थे तो तब तक टोटो रूका हम सब उतर कर चलने लगे, तब मुझे पता नहीं था कि हम वरिष्ठ शिक्षक और साहित्यकार हरिशचंद्र मिश्रा जी के घर जा रहे हैं। मेरे लिए बड़ी सौभाग्य की बात थी उस्मान सर जो मेरे गुरू है, मैं उनके गुरू से मिली। जब हम सर के घर की ओर जा रहे थे वहाँ पर कुछ मुझे नारंगी रंग के फूल दिखे। जो दिखने में बहुत सुंदर थे। वे फूल ऐसे आपस में गुंथे हुए थे, जैसे मनुष्य के रिश्ते आपस में गुंथे हुए होते हैं जो कभी नहीं टुटते। सर के घर का प्रमुख आकर्षण थे संजु और मंजु, जो बहुत प्यारे शशक थे। वह हम सब को ऐसे कौतुक से देख रहे थे जैसे वह हमें पहचान ना पाने के कारण हम सब से दुर जाना चाहा रहे हो। जब हम उनके घर में प्रवेश कर रहे थे जहाँ सर हमारे स्वागत के लिए खड़े थे। सर हमारे साथ घूम घूम कर अपना बगीचा और उसके पेड़ और अपने घर के हर वस्तु के विषय में बता रहे थे, जैसे अपने बच्चे को दुनिया के विषय में माता पिता बताते हैं। तब मैं सर की धर्मपत्नी से मिली। सर और मैडम के चेहरे पर वह खुशी देख कर ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने बच्चों से सालों बाद मिले हो जिन पर वह आपना सारा प्यार लूटाना चाहा रहे हो। मुझे तो सर और मैडम के साथ एक तस्वीर लेनी थी, ताकी उसे देख कर मैं हमेशा उन्हें याद कर सकूँ। मुझे उनसे कभी ना कभी फिर से मिलना ही है। जब हम सब जाने के लिए अनुमति ले रहे थे तब दोनों के चेहरे पर उदासी छा गई। उनसे मिल कर बहुत अच्छा लगा।

पुलवामा का वीर

वो बहन कितनी रोई होगी
कभी वह अपनी रक्षा के लिए
भाई की कलाई पर राखी बाँधा करती थी,
वह पत्नी कितनी रोई होगी
जिसकी लम्बी उम्र के लिए
वह दुआ किया करती थी,
वह बच्चा की कितनी उम्मीद होगी
वह अपने पिता को देखे
जो शायद कभी वापस नहीं आयेंगे,
वो माँ कितनी रोई होगी
जब उसके रहते उसके सामने
उसके बेटे का लाश पड़ी हो
वह पिता अपने आप पे गर्व करते होगे
कि वह ऐसे वीर के पिता हैं,
मगर जिसे उन्हें कंधा देना था
वही उसे कंधा देकर जाते हैं,
हमें गर्व है उस वीर पर
उसके परिवार पर
हमारी हर साँस तुम्हारी ऋणी है।

शरीफा शरवारी, +3 द्वितीय वर्ष

विश्वभारती

https://youtu.be/BXxlS6psi6Q

यादों के गलियारों से

हिंदी विभाग

विश्वभारती की कक्षायें

विश्वभारती मुख्य पुस्तकालय

धन्यवाद